आधी आबादी

हर सन्डे वूमेन्स डे

संस्करण – रविवार, 18 जून 2023, अंक – 06

विशेष संपादकीय

ध्यान दो सरकार!

– राजेश शर्मा

कर्नाटक में नई चुनी गई कांग्रेस सरकार का ताज़ा बयान काफी चौंकाने वाला है। जिसमें सरकार ने कहा है कि उसने पाठ्यपुस्तकों के संशोधन की प्रक्रिया शुरू कर दी है। शिक्षा मंत्री मधु बंगारप्पा ने विधानसभा को बताया कि चालू शैक्षणिक वर्ष के दौरान, अवैज्ञानिक और संवैधानिक विरोधी सामग्री को संशोधित किया जाएगा। उनके मुताबिक पिछली भाजपा सरकार ने पाठ्यक्रम में आपत्तिजनक सामग्री जोड़ी है। मुख्यमंत्री सिद्दारमैया खुद उन पहलुओं के पुनरीक्षण को लेकर चिंतित हैं। लेखकों और साहित्यकारों ने भी अपनी राय दी है। विशेषज्ञ सलाह दे रहे हैं कि बच्चों को पढ़ाया जाने वाला पाठ्यक्रम वैज्ञानिक होना चाहिए और उसमें सामाजिक अभिविन्यास होना चाहिए। उन्होंने कहा, सुझाव इस चिंता के साथ दिया गया है कि युवा दिमाग में गलत ज्ञान नहीं डाला जाना चाहिए। विशेषज्ञ भी अपनी सिफारिशें देंगे कि पाठ्यक्रम के किन पहलुओं को जारी रखा जाना चाहिए और उनमें से किसे छोड़ा जाना चाहिए। उन्होंने कहा, चूंकि पाठ्यपुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं और स्कूलों में पहुंच चुकी हैं, इसलिए संशोधित पाठ्यक्रम को प्रकाशित करना संभव नहीं है। छात्रों को अभी तक पाठ्यक्रम नहीं पढ़ाया गया है। सरकार इस संबंध में उचित समय पर दिशानिर्देश जारी करेगी। इस संबंध में अगली कैबिनेट बैठक में निर्णय लिया जाएगा। मंत्री ने कहा, कार्रवाई बच्चों के हित में की जाएगी। यह बहुत ही संवेदनशील मामला है। इस पर कैबिनेट में चर्चा होनी है। बड़े पैमाने पर चर्चा की भी जरूरत है और बच्चों के हित को ध्यान में रखते हुए यह करना होगा। पिछली भाजपा सरकार ने राज्य के पाठ्यक्रम में संशोधन करते हुए आरएसएस के संस्थापक केशव बलिराम हेडगेवार पर एक पाठ जोड़ दिया था और दक्षिणपंथी विचारकों के ग्रंथों को शामिल किया, जिससे एक बड़ा विवाद खड़ा हो गया। भाजपा सरकार ने तब मैसुरु के पूर्व शासक टीपू सुल्तान का कथित महिमामंडन भी बंद करवा दिया था। अब कांग्रेस पूरे पाठ्यक्रम को बदलने की तैयारी में है। बड़ा सवाल है कि क्या अब देश की राजनीति ऐसे ही चलेगी? जो सत्ता में होंगे वो अपने मनपसंद विषय बच्चों को पढ़ाया करेंगे? क्या किसी सरकार को इन बच्चों के भविष्य की चिंता नहीं है? आज भी स्त्री-पुरुष के बीच असमान शिक्षा व्यवस्था सबसे बड़ा चिंता का कारण है। सरकार इन पहलुओं पर ध्यान देने के बजाय फर्जी चीजों में ज्यादा उलझ जाती है। इस तरह के कदम निश्चित ही निराश करते हैं। चाहे किसी की भी सरकार हो इस तरह से स्कूली बच्चों के साथ खेलना आपको शोभा नहीं देता। देश के भविष्य के साथ खिलवाड़ करने का आपको कोई हक नहीं।

क्या पीएम मोदी ने देश को क़र्ज़ में डुबो दिया है?

■ हीरेंद्र झा

बीजेपी इन दिनों मोदी सरकार के नौ साल पूरे होने का जश्न मना रही है। इस मौक़े पर बीजेपी ने महासंपर्क अभियान शुरू किया है। इसके तहत मोदी सरकार के कैबिनेट मंत्री, बीजेपी शासित राज्यों के मुख्यमंत्री और पार्टी कार्यकर्ता देश के सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में सरकार की उपलब्धियों के बारे में जानकारी दे रहे हैं। पिछले हफ़्ते इसी मुद्दे पर कांग्रेस की तरफ़ से प्रेस कॉन्फ्रेंस की गई थी। इस दौरान कांग्रेस प्रवक्ता सुप्रिया श्रीनेत ने आरोप लगाया कि अर्थव्यवस्था की वर्तमान स्थिति के लिए मोदी सरकार का 'आर्थिक कुप्रबंधन' ज़िम्मेदार है। सुप्रिया श्रीनेत ने कहा, "मोदी सरकार नौ साल का जश्न मना रही है तो ज़रूरी है कि आईना भी दिखाया जाए। नरेंद्र मोदी जी ने वो कीर्तिमान स्थापित किया है, जो इस देश के 14 प्रधानमंत्री उनसे पहले नहीं कर पाए हैं।" "इस देश के 14 प्रधानमंत्रियों ने कुल मिलाकर मात्र 55 लाख करोड़ रुपए का कर्ज़ा लिया। 67 साल में 14 प्रधानमंत्रियों ने कुल 55 लाख करोड़ रुपए का कर्ज़ा लिया और हर बार रेस में आगे रहने की चाहत वाले नरेंद्र मोदी जी ने पिछले नौ सालों में हिन्दुस्तान का क़र्ज़ा तिगुना कर दिया। 100 लाख करोड़ से ज़्यादा का क़र्ज़ा उन्होंने मात्र नौ साल में ले लिया।" सुप्रिया का दावा है कि 2014 तक भारत पर 55 लाख करोड़ रुपए का क़र्ज़ था जो अभी 155 लाख करोड़ तक जा पहुँचा है।

इस साल फरवरी में जारी किए गए बजट में वित्तीय वर्ष 2022-23 के अंत तक क़र्ज़ की धनराशि का अनुमान 152.61 लाख करोड़ रुपए लगाया गया था। इसमें आंतरिक ऋण लगभग 148 लाख करोड़ रुपए और विदेशी ऋण लगभग पाँच लाख करोड़ रुपए है। अगर इसमें अतिरिक्त बजटीय संसाधन (ईबीआर) और कैश बैलेंस को शामिल किया जाता है, तो कुल अनुमानित कर्ज़ 155.77 लाख करोड़ रुपए हो जाएगा। सरकार ईबीआर को बजट में लिखित कामों से अलग ज़रूरतों को पूरा करने के लिए रखती है और कैश बैलेंस अतिरिक्त पैसा होता है, जिसे इमरजेंसी में इस्तेमाल किया जा सके। वित्त मंत्री निर्मला सीतरमण के मुताबिक, "31 मार्च, 2023 तक की स्थिति के अनुसार केंद्र सरकार के ऋण/देनदारियों की कुल राशि लगभग 155.8 लाख करोड़ रुपए (जीडीपी का 57.3 फ़ीसदी) होने का अनुमान है" "इसमें से वर्तमान विनिमय दर पर विदेशी ऋण 7.03 लाख करोड़ रुपए (जीडीपी का 2.6 फ़ीसदी) अनुमानित है।"

बढ़े हुए कर्ज़ को आर्थिक विश्लेषक परंजॉय गुहा ठाकुरता सरकार की मज़बूरी बताते हैं। परंजॉय कहते हैं, मोदी सरकार के पास कर्ज़ लेने के अलावा और कोई रास्ता नहीं है। दुर्भाग्यपूर्ण है कि ये सरकार कर्ज़ के ऊपर चल रही है। बकौल परंजॉय गुहा ठाकुरता सरकार क़र्ज़ का पैसा मुफ़्त की योजनाओं से लेकर नई संसद जैसी चीज़ों पर ख़र्च कर रही है। वे कहते हैं, "सरकार कहती है कि हम मुफ़्त गेहूँ-चावल दे रहे हैं, मुफ़्त सिलेंडर दे रहे हैं, किसान सम्मान निधि दे रहे हैं तो इन सब चीज़ों में कर्ज़ की धनराशि ख़र्च की जा रही है। इसके अलावा नई संसद बनाने में भी सरकारी कर्ज़े का इस्तेमाल हो रहा है।"

निश्चय ही ये आँकड़े डरावने हैं। अगर यह सच है तो हमें इस दिशा में सोचने की जरूरत है। कांग्रेस पहले ही भ्रष्टाचार के सारे रिकॉर्ड तोड़ चुकी है। तो उस पर भी भरोसा करने के लिए हमारे पास कोई वजह नहीं। प्रधानमंत्री जी को हर पहलू पर विचार करके राष्ट्र हित में आगे बढ़ना चाहिए, उनसे हम यही उम्मीद करते हैं।

इंटरव्यू

महिला पहलवानो का धरना प्रदर्शन भले ही खतम हो गया हो लेकिन बृज भूषण शरण सिंह के खिलाफ़ विरोध अब भी जारी है। इस बीच खेल मंत्री अनुराग ठाकुर और गृह मंत्री अमित शाह से भी पहलवानों की मुलाकात हुई है पहलवानों को कार्रवाई का आश्वासन भी दिया गया है लेकिन अब भी पहलवानों के तमाम मसले है जिनहे लेकर वह अपने रुख पर कायम है। इसी कड़ी में साक्षी मलिक ने आधी आबादी टीम से भी बातचीत की है। प्रस्तुत हैं बातचीत के मुख्य अंश-

सवाल- कई लोग जानना चाहते हैं कि आपकी सरकार से मांग क्या है?

साक्षी- हमारी शुरुआती दिन से और अभी भी मांग है कि बृजभूषण शरण सिंह की गिरफ्तारी हो और फेडरेशन उसके चंगुल से छूट जाए। हम चाहे गृहमंत्री से मिले हैं या खेल मंत्री से हमारी मांग हमेशा यही रही है।

सवाल-सरकार के अन्य कदमों के बीच प्रधानमंत्री मोदी की चुप्पी के बारे में क्या कहेंगी?

साक्षी-दुख तो होता ही है, जिन्होंने मेडल आने पर इतना मान सम्मान दिया था, घर बुलाया था और वो इस बारे में बात ही नहीं कर रहे हैं। चालीस दिन के लगभग हम रोड पर थे तब भी उन्होंने कुछ नहीं कहा। जब प्रोटेस्ट किया तब भी कुछ नहीं कहा जबकि उनको सब पता है कि हम किस चीज़ के बारे में प्रोट्स्ट कर रहे हैं।

सवाल-महीनो से चल रहे आपके आंदोलन पर प्रधानमंत्री मोदी से आप क्या कहना चाहती हैं?

साक्षी-उन्होंने हमसे अभी इस टॉपिक पर कोई बात ही नहीं की जो की एक बहुत सेनसिटिव मुद्दा है, और हम सब तो उनसे पर्सनली मिले भी हैं, उनके साथ लंच किया है, बेटी बुलाते हैं वो हमें, तो यही कहना चाहूंगी कि हमारे मुद्दे को वो अपने संज्ञान में लें। उनको ज़रूर इनवॉल्व होकर बोलना चाहिए कि ये जो पुलिस कार्रवाई है वो बिल्कुल निष्पक्ष हो, जांच में कोई भी छेड़छाड़ ना की जाए, हम बस इतना चाहते हैं को जो भी इनवेस्टिगेशन हो वो फेयर हो।

सवाल-नाबालिक महिला पहलवान के अपने बयान से पीछे हटने की बात पर आप क्या कहेंगी?

साक्षी-मुझे लगता है कि उन पर दबाव बनाया गया था तभी वो अपने बात से पलट रही हैं। सच कहूँ तो समझौता करने के लिए हम पर भी दबाव बनाया जा रहा है।

सवाल-आगे आप सबकी क्या रणनीति होगी?

साक्षी-हम लोग न्याय पाने के लिए लड़ाई लड़ते रहेंगे और हेमीन महिला संगठन के साथ-साथ मजदूर संगठन, किसान और आम लोगों का भी समर्थन मिला है और हमें उम्मीद है कि यह समर्थन जारी रहेगा।

हलचल

जीरो ब्याज दर पर मिलेगा महिलाओं को पैसा!

महिलाओं के लिए विशेष महिला सम्मान बचत योजना शुरू करने के बाद से अब महिलाओं के लिए नए ब्याज मुक्त लोन का तोहफा सरकार ने दिया है। केंद्र सरकार ने महिला उद्यमियों द्वारा कारोबार में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिए यह योजना शुरू की है। इस योजना के तहत महिलाओं को तीन लाख रुपए तक ब्याज मुक्त कर्ज की सुविधा प्रदान की गई है। कुछ महिलाएं बचत समूह बनाकर गृह उद्योग शुरू करती हैं। इससे गांवों और शहरों में रोजगार के साधन उपलब्ध होते हैं और महिलाएं स्वावलंबी बनती हैं। महिलाओं के लिए सभी कर्ज में कुछ हद तक छूट दी गई है। तीन लाख रुपए तक का कर्ज बेहद कम दरों पर मिलता है। पांच लाख रुपये तक के कर्ज के लिए किसी भी तरह की चीज गिरवी रखने की आवश्यकता नहीं है।

4 साल की बच्ची के रेप और मर्डर का मामला, राष्ट्रपति ने खारिज की दोषी की दया याचिका

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने एक चार की बच्ची से बलात्कार और हत्या के मामले में दोषी एक व्यक्ति की दया याचिका को खारिज कर दिया। राष्ट्रपति भवन ने जानकारी देते हुए बताया कि राष्ट्रपति मुर्मू ने महाराष्ट्र में साल 2008 में एक चार साल की बच्ची से बलात्कार करने और पत्थरों से कुचलकर उसकी हत्या करने के दोषी व्यक्ति की दया याचिका खारिज की। सुप्रीम कोर्ट ने 3 मई 2017 में 55 साल के वसंत संपत दुपारे की दया याचिका को खारिज कर दिया था और उसकी फांसी बरकरार रखी थी। राष्ट्रपति सचिवालय को इस साल 28 मार्च को इस मामले में गृह मंत्रालय की सिफारिश प्राप्त हुई थी। राष्ट्रपति सचिवालय ने दया याचिका की स्थिति से संबंधित अपडेट देते हुए बयान में कहा, "राष्ट्रपति ने इस मामले में दया याचिका खारिज कर दी है।"

महिला पहलवान यौन उत्पीड़न मामले में बृजभूषण के खिलाफ आरोपपत्र दाखिल

दिल्ली पुलिस ने यौन उत्पीड़न तथा पीछा करने के अपराधों को लेकर भारतीय कुश्ती महासंघ (डब्ल्यूएफआई) के निवर्तमान प्रमुख बृजभूषण शरण सिंह के खिलाफ बृहस्पतिवार को आरोपपत्र दाखिल किया। सरकार ने प्रदर्शन कर रहे पहलवानों को आश्वासन दिया था कि मामले में 15 जून तक आरोपपत्र दाखिल कर दिया जाएगा, जिसके बाद उन्होंने अपना आंदोलन स्थगित कर दिया था। दिल्ली पुलिस की जनसंपर्क अधिकारी (पीआरओ) सुमन नालवा ने एक बयान में बताया कि पॉक्सो (यौन अपराधों से बच्चों का संरक्षण) मामले में शिकायतकर्ता यानी नाबालिग के पिता तथा स्वयं लड़की के बयानों के आधार पर मामले को रद्द करने का अनुरोध करने वाली रिपोर्ट दाखिल की गई। पटियाला हाउस अदालत में अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश राजेन्द्र सिंह ने कहा कि मामले को रद्द करने की रिपोर्ट पर चार जुलाई को विचार किया जाएगा। महिला पहलवानों की शिकायत पर दर्ज एक अन्य मामले में राउज एवेन्यू अदालत में अतिरिक्त मुख्य मेट्रोपॉलिटन मजिस्ट्रेट दीपक कुमार ने आरोपपत्र पर विचार करने के लिए 22 जून की तारीख तय की।

एशियाई महिला शतरंज में दिव्या बनीं चैंपियन, मैरी एन गोम्स रही उपविजेता

भारत की दिव्या देशमुख एशियाई महाद्वीपीय शतरंज चैंपियनशिप की महिला क्लासिकल स्पर्धा में चैंपियन बनीं, तो वहीं मैरी एन गोम्स उपविजेता रहीं। 17 वर्षीय दिव्या ने कजाकिस्तान की जेनिया बालाबायेवा के साथ नौवें और अंतिम दौर के मुकाबले को ड्रा खेला और 7.5 अंकों के साथ शीर्ष पर रहीं। मैरी ने भी आखिरी दौर में ड्रा खेला और 6.5 अंकों के साथ दूसरे स्थान पर रही। भारतीय खिलाड़ी साक्षी चितलंगे 5.5 अंकों के साथ सातवें स्थान पर रहीं। अन्य भारतीयों में पीवी नंदीधा और आशना मखीजा क्रमश: 13वें और 14वें स्थान पर रहीं। दिव्या देशमुख को गोल्ड मेडल से नवाजा गया और उपविजेता मैरी को सिल्वर मेडल मिला। दोनों विजेताओं ने एक बार फिर एशियन चैंपियनशिप में भारत का नाम गर्व से ऊंचा कर दिया है। दिव्या देशमुख ने साल की शुरुआत में लगातार दूसरी बार राष्ट्रीय महिला शतरंज का ताज बरकरार रखा था।

महिला हॉकी जूनियर एशिया कप में भारत की ऐतिहासिक जीत, पीएम मोदी ने दी बधाई

महिला जूनियर एशिया हॉकी कप 2023 का आयोजन 2 जून से 11 जून 2023 तक जापान के काकामिगहारा में किया गया। पिछले रविवार को इसका फाइनल मुकाबला कोरिया और भारत के बीच हुआ। इसमें भारतीय टीम ने 2-1 गोल कोरिया को हराकर खिताब अपने नाम किया। इस ऐतिहासिक जीत के लिए पीएम नरेंद्र मोदी ने भी ट्वीट कर बधाई दी। पीएम मोदी ने टूर्नामेंट में कड़ी मेहनत और बेहतरीन प्रदर्शन के लिए भारतीय महिला टीम की सराहना की। पीएम मोदी ने ट्वीट करते हुए लिखा, "2023 महिला हॉकी जूनियर एशिया कप जीतने पर हमारे युवा चैंपियन को बधाई! टीम ने काफी दृढ़ता, प्रतिभा और टीम वर्क दिखाया है। उन्होंने हमारे देश को बहुत गौरवान्वित किया है. आगे के प्रयासों के लिए उन्हें शुभकामनाएं।"

अमीषा पटेल मुंह छुपाकर रांची कोर्ट पहुंचीं, किया सरेंडर!

▪ आधी आबादी डेस्क

> “फिल्म अभिनेत्री अमिषा पटेल और उनके बिजनेस पार्टनर कुणाल गूमर के खिलाफ धोखाधड़ी का केस दर्ज करवाया गया था। उन पर पैसे लेकर म्यूजिक एल्बम नहीं बनाने का आरोप है। इसके अलावा, उनपर धोखाधड़ी और धमकाने का भी आरोप है।”

गदर फ़ेम बॉलीवुड अभिनेत्री अमीषा पटेल की मुश्किलें बढ़ गई हैं। धोखाधड़ी के एक मामले में शनिवार को अमिषा पटेल रांची सिविल कोर्ट में पेश होने पहुंची, इसके बाद अभिनेत्री ने सरेंडर कर दिया। फिल्म अभिनेत्री अमिषा पटेल और उनके बिजनेस पार्टनर कुणाल गूमर के खिलाफ धोखाधड़ी का केस दर्ज करवाया गया था। उन पर पैसे लेकर म्यूजिक एल्बम नहीं बनाने का आरोप है। इसके अलावा, उनपर धोखाधड़ी और धमकाने का भी आरोप है। इसी मामले में पिछले दिनों रांची सिविल कोर्ट ने अभिनेत्री को कोर्ट में हाजिर होने को कहा था लेकिन वो कोर्ट में पेश नहीं हुईं। जिसके बाद उनके खिलाफ कोर्ट ने वारंट जारी कर दिया।

सशर्त मिली जमानत

अदालत में पेश होने के बाद अमीषा पटेल को 21 जून तक सशर्त जमानत दे दी गई है। 21 जून को इस मामले में अगली सुनवाई होगी। कोर्ट ने अमीषा पटेल को भी उपस्थित रहने का आदेश दिया है।

क्या है पूरा मामला

बता दें कि अरगोड़ा निवासी अजय कुमार सिंह ने यह केस 17 नवंबर 2018 को सीजेएम कोर्ट में की थी। आरोप है कि म्जूयिक मेकिंग के नाम पर अमीषा पटेल ने अजय कुमार सिंह से ढाई करोड़ रुपये ले लिए लेकिन इसके बाद उन्होंने म्यूजिक मेकिंग की दिशा में कदम नहीं उठाया।

साथ ही अमीषा पटेल पर फिल्म 'देस मैजिक' बनाने के नाम पर अजय सिंह से ढाई करोड़ रुपये ऐंठने का आरोप है। इकरारनामा के अनुसार, जब फिल्म जून 2018 में रिलीज नहीं हुई तो अजय ने पैसे की मांग की। टालमटोल के बाद अक्टूबर 2018 में अजय सिंह को ढाई करोड़ और 50 लाख रुपए के दो चेक दिए गए, जो बाउंस हो गए। इसके बाद अजय सिंह ने अभिनेत्री पर मुकदमा कर दिया।

गोंडल रियासत में स्त्री शिक्षा!

▪ शम्भूनाथ शुक्ल

भारत में एक स्थान है सौराष्ट्र। और ब्रिटिश इंडिया में जो 565 रियासतें थीं, उनमें से 224 अकेले इस सौराष्ट्र में थीं। जो आज गुजरात राज्य का एक छोटा हिस्सा है। पहले जूनागढ़ को ये रियासतें कर देती थीं, फिर जब मराठे ताक़तवर हुए तो बड़ौदा स्टेट को। 1844 में अंग्रेजों ने इन्हें बड़ौदा और जूनागढ़ से मुक्त कर दिया। यहाँ एक छोटी-सी रियासत थी गोंडल की। इसी गोंडल में स्वामी नारायण संप्रदाय को आश्रय मिला। सुदूर पूर्व के अवध क्षेत्र के छपिया (ज़िला गोंडा) से एक ब्राह्मण बालक कुछ और जानने के ध्येय से घर से चला गया। हिमालय की वादियों और घने जंगलों में भटकते हुए वह सौराष्ट्र पहुँचा तब तक वह एक संन्यासी हो चुका था। उसका संन्यास थोड़ा भिन्न था। इसमें समाज सुधार था, और यह संप्रदाय नई योरोपीय मान्यताओं के अनुरूप भी। इस संप्रदाय का ज़ोर स्त्री-शिक्षा पर था। गोंडल की राजमाता ने स्वामी जी को आश्रय दिया और कन्या शिक्षण हेतु 1870 में विद्यालय स्थापित हुआ। राजमाता विधवा थीं। उनके पति की 1869 में मृत्यु हो गई थी। तब उनके चार वर्षीय पुत्र भागवत सिंह को स्टेट का राजा बनाया गया। अंग्रेज इस राजा की देख-रेख कर रहे थे। स्टेट का दीवान एक पारसी था। बालक भागवत सिंह को राजकोट के राजकुमार कॉलेज में पढ़ने के लिए भेजा गया। पढ़ाई पूरी होने पर ब्रिटिश गवर्नमेंट ने उन्हें 1888 में महाराजा घोषित किया। तथा इस युवा महाराजा को योरोप घूमने को कहा। वहाँ पर महाराजा भागवत सिंह योरोप के आधुनिक अस्पतालों, चिकित्सा से बहुत प्रभावित हुए। रियासत वापस आने पर उन्होंने अपनी माँ और दीवान से कहा कि वे अभी राज काज तीन चार साल और देखें। महाराजा साहब फिर योरोप गए और यूनिवर्सिटी ऑफ़ एडिनबरा से एमडी किया। लौटने पर उन्होंने कई अस्पताल खुलवाए और तब चूँकि लोग अपनी औरतों का इलाज़ पुरुष डॉक्टरों से करवाने में हिचकिचाते थे इसलिए महाराजा ने कई ज़नाना अस्पताल खुलवाए, जहां डॉक्टर से लेकर पैरा मेडिकल स्टाफ़ तक सब महिलाएँ थीं। बीसवीं सदी के शुरू के वर्षों में यह सब कितना मुश्किल रहा होगा! और उस काठियावाड़ में जहाँ पहुँचना मुश्किल था। जहाँ की ज़मीन बुंदेलखंड से भी अधिक बंजर और पानी का घोर अभाव। इसके साथ ही हर दस कोस पर दूसरी रियासत में घुसना। बम्बई से गोंडल जाने में ही सौ के क़रीब रियासतों को पार करना होता था। लेकिन महाराजा धुन के पक्के थे। “औषधि शास्त्र” महाराजा भागवत सिंह की अद्भुत पुस्तक है। यह राजवंश जाड़ेज़ा राजपूतों का था। गोंडल ब्रिटिश राज के उन आठ नगीनों में से है, जहाँ सबसे पहले जाति-भेद ख़त्म हुआ। धर्म-भेद नहीं रहा और जहाँ स्त्री-शिक्षा अनिवार्य थी। यानी आप भले अपने बेटों को न पढ़ाएँ लेकिन बेटी पढ़ाना अनिवार्य की। महाराजा भागवत सिंह ने लंबी उम्र पाई और 1944 में उनकी मृत्यु हुई।

सर्राफा बाज़ार

22 कैरेट सोना	चांदी
₹54,580	₹72,284
प्रति 10 ग्राम	प्रति किलो

'आदिपुरुष' का हासिल क्या है?

■ निमिषा दीक्षित

बहुप्रतीक्षित फिल्म 'आदिपुरुष' रिलीज के बाद से ही सुर्खियों में है। सोशल मीडिया पर इस फिल्म को लेकर काफी आलोचना देखने को मिल रही है। हर पार्टी और हर वर्ग के दर्शक इस फिल्म का विरोध कर रहे हैं। पत्रकार सर्वप्रिया सांगवान लिखती हैं कि- ऐसा लगता है कि आदिपुरुष फ़िल्म के निर्देशक और लेखक भारत के मानस को समझ नहीं पाए हैं। जिस तरह की राइटिंग, लेखक मनोज शुक्ला ट्विटर के कुछ दस हज़ार लोगों की वाहवाही के लिए करते हैं, उन्हें शायद ये ग़लतफ़हमी हुई कि अब पूरा भारत ऐसे ही राम को चाहता है। कुछ कारों के पीछे लगे हनुमान जी के गुस्सैल भावों वाले स्टिकर से उन्होंने सोच लिया कि भारत के लोग बदल रहे हैं। ऐसा नहीं है कि ऐसे लोग हैं ही नहीं। ज़रूर हैं पर वे भारतीय समाज के प्रतिनिधि नहीं हैं। इस फ़िल्म पर आई आम लोगों की प्रतिक्रिया से तो लगता है कि वे अब भी राम को करुणा, सौम्यता और मर्यादा की छवि मानते हैं। अगर हनुमान उनके भक्त हैं तो उनके जैसे ही होंगे ना। भक्ति का अर्थ तो सब समझते हैं ना।

ये देश इतना सरल भी नहीं है। कई लोग रावण को बुराई का प्रतीक मानते हैं, तो कई लोग इज़्ज़त से भी देखते हैं। कई लोग रामचरितमानस को धार्मिक किताब मानते हैं तो कई लोग साहित्य के तौर पर भी देखते हैं। इसी भारत में राम और उनकी कहानी के हज़ारों वर्ज़न हैं। एक दूसरे से एकदम अलग। कोई उन कहानियों को लेकर आपस में लड़ता नहीं है। लेकिन ट्विटर पर एक अलग समाज बसता है जिसकी वजह से लगता है कि पूरा भारत एक सिविल वॉर में है।

मुझे इस फ़िल्म के लोगों के लिए बुरा लग रहा है। मैं क्रिएटिव फ़्रीडम की पक्षधर हूँ। मैं इस फ़िल्म को धार्मिक नज़र से देखती ही नहीं। मुझ में इतनी समझ और सहनशीलता है। ये दुर्भाग्य है कि लोगों में सिनेमा को देखने-परखने और उससे कुछ सकारात्मक हासिल करने की समझ अभी बहुत कच्ची है। आजकल फ़िल्म बनाने वालों की नीयत भी कुछ सकारात्मक देने की है नहीं। इस फ़िल्म के निर्देशक ही चाहते थे कि इस फ़िल्म को धर्म की नज़र से देखा जाये। फ़िल्म के लेखक ही तो चाहते हैं कि ये समाज अब 'बर्दाश्त' न करे। बर्दाश्त करना और विविधता को स्वीकार करना दो अलग बातें हैं। आप ये अपेक्षा कैसे कर सकते हैं कि जिस असहनशील समाज को आप तैयार कर रहे हैं, किसी दिन आप ख़ुद उसकी असहनशीलता का शिकार नहीं होंगे?

वहीं जाने माने फिल्म समीक्षक अजय ब्रह्मात्मज के मुताबिक- एक बार एक लोकप्रिय कलाकार ने स्पष्ट शब्दों में मुझे बताया था। कई बार हमें मालूम होता है कि हमने एक बुरी फिल्म चुन ली है। वह अच्छी बन भी नहीं रही है। फिर भी फिल्म के लिए हां कह देने के बाद मन मसोसकर हम अपने किरदार को बेहतरीन बनाकर पेश करना चाहते हैं। चूंकि फिल्म में सब कुछ कमजोर होता है तो हमारी मेहनत निष्फल रहती है। इस फिल्म के बनने के दौरान हम मीडिया और लोगों से यही कहते हैं कि फिल्म बहुत अच्छी बन रही हैं। फिल्म के रिलीज होने के बाद प्रचार में भी हम उसे ही दोहराते हैं कि फिल्म बहुत अच्छी बनी है। एकदम नई है। हम कहीं नहीं सकते कि फिल्म खराब है या हमसे कोई गलती हो गई। इस स्पष्टता को ध्यान में रखें तो मान लें ओम राऊत और मनोज मुंतशिर शुक्ला अभी अपनी चूक या गलती नहीं स्वीकार करेंगे। साथ ही देखते जाइए कि अपने बचाव में खुद के ही कमजोर तर्कों से वे और फंसते जाएंगे। बहरहाल, आदिपुरुष ने दर्शकों को काफी निराश किया है। लोग इसकी तुलना रमानंद सागर के रामायण से भी कर रहे हैं, जिसके सामने ये करोड़ों की फिल्म कहीं नहीं टिकती। डायरेक्टर तक ने सफाई दे दी है कि हमने रामायण नहीं आदिपुरुष बनाई है। कुल मिलाकर हर तरफ इस फिल्म की जगहँसाई हो रही है।

पुस्तक समीक्षा: हमारे समय की एक नायाब किताब है "ये नायाब औरतें"

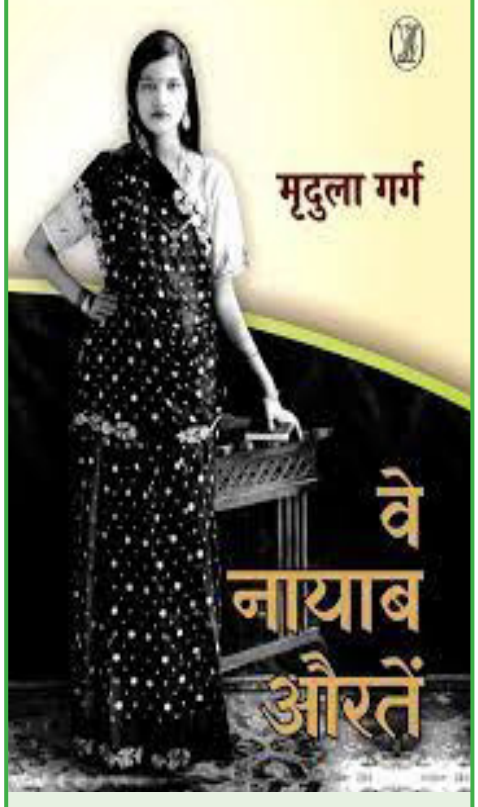

वाणी प्रकाशन से आई लगभग साढ़े चार सौ पेज की किताब है- "ये नायाब औरतें"। पढ़े गए तीन अध्यायों के आधार पर जो मेरी राय बनी वो ये है कि मृदुला गर्ग का अंदाज़े बयां कुछ और है, एकदम अलहदा। "जइसे अमुआ के मोजरा से रस चुएला..." इसीलिए वे सबसे अलग हैं सबसे जुदा। हम जिन गुमशुदा स्त्रियों की तलाश में हैं उनका पता देती है ये किताब। वक्त की धूल झाड़ कर बाहर निकलती हुई स्त्रियों की रोचक कथाएं सुनिए। बहुत समय बाद ऐसी कोई किताब पढ़ रही हूँ जिसे पढ़ते-पढ़ते कभी जोर -ज़ोर से हंसती हूँ तो कभी आँख नम हो जाती है। कितना रोचक, कितना भव्य वर्णन। इसी अध्याय में एक चोर और उनकी आया का प्रसंग है जिसे पढ़ कर हंसती रही मैं। कितना मज़ेदार ढंग से लिखा है। मैं यहाँ कैसे वर्णन करूँ? इस घटना में हर किरदार विलक्षण है, यहाँ तक कि चोर भी और उसे पकड़ लेने वाली आया स्वर्णा भी। लेखिका के पिता भी यहाँ उतने ही "कूल" नज़र आते हैं। ज़बरदस्त प्रसंग है। अभी तक हंसी आ रही है। मात्र तीन अध्याय पढ़ कर मेरा ये हाल है। पूरी किताब में जाने कितने ऐसे प्रसंग होंगे। लालच तो बहुत आ रहा, मगर रुकना होगा। हर अध्याय स्वतंत्र है। इसलिए अलग -अलग पढ़ना रोचक ही होगा। कुछ बातें, कुछ सोच मुझे उनसे जोड़ती हैं... जैसे एक बात - वे लिखती हैं- जीवन लेखन का केंद्र है, लेखन जीवन का नहीं।" बस एक ये बात अक्सर दोहराती रहती हूँ... ! खैर नायाब संस्मरणों के लिए हमारे समय की नायाब लेखिका मृदुला गर्ग जी को बधाई और शुभकामनाएँ!

प्रबंध संपादक: दिनेश के सिंह ❁ संपादक: हीरेन्द्र झा-निमिषा दीक्षित ❁ सलाहकार संपादक: चारुल मल्लिक, राजेश शर्मा, गीता सिंह ❁ डिज़ाइनर: मो. हसमतुल्लाह अंसारी

RNI-DELHIN/2013/51353